D(H)

अशोक का शासन प्रबन्ध

Administration of Ashoka.

(1)

अशोक को उत्तराधिकार में न केवल एक विस्तृत साम्राज्य ही मिला था अपितु एक सुदृढ़ शासन-व्यवस्था भी प्राप्त हुई थी। अपने राज्याभिषेक के प्रथम नौ वर्षों में उसने इस शासन व्यवस्था को ज्यों का त्यों चलने दिया था, किन्तु कलिंग-विजय के उपरान्त उसकी विचारधारा में महान् परिवर्तन हो गया था। उसने राजनीति में नवीन सिद्धान्तों तथा आदर्शों का समावेश किया था।

अशोक एक आदर्श राजा था। उसका राज्य-काल सर्वलोक हित के लिए सु-विख्यात है। उसके शिलालेख और कलिंग के दोनों लेखों से उसके राजत्व के आदर्श का ज्ञान होता है। इतिहास प्रसिद्ध विभिन्न बड़े-बड़े राजाओं ने राज्य की शक्ति और धन का प्रयोग विजय-पिपासा को शान्त करने के लिए किया। अशोक में भी यह दोष था, किन्तु कलिंग-युद्ध ने तो उसके विचारों का बदल कर रख दिया। उसने प्रतिज्ञा की कि वह राज्य के सारे साधनों का प्रयोग भी प्रजा की भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिये ही करेगा। सर्वलोक हित ही उसका आदर्श बन गया। अशोक ने अपनी प्रजा को अपनी सन्तान का स्थान दिया। एक पिता की भाँति ही उनकी भलाई के लिए वह सदा तैयार रहता था। प्राचीन शास्त्रों में तीन ऋणों पितृऋण, देवऋण और ऋषिऋण का उल्लेख है अशोक ने राजा के लिए चौथा ऋण भूतऋण भी जोड़ दिया। डॉ० आर० सी० मजूमदार के अनुसार, शासक की किसी शासन ने राजा और प्रजा के सम्बन्धों पर अपने सरल ढंग भाषा के अपने विचारों को व्यक्त किया है। इस प्रकार

हम देखते हैं कि पितृवत शासन के सिद्धान्त पर आधारित सर्वलोकहित ही- अशोक का आदर्श था।

अपने आदर्शों को कार्यान्वित करने के लिए अशोक ने निम्नलिखित प्रशासकीय सुधार किए :-

(1) अधिकारी का दौरा :- अशोक ने रज्जुक, पुतों महामात्यों आदि उच्च अधिकारियों को तीन-तीन अथवा पाँच-पाँच वर्षों पर दौरा करने का आदेश दिया। उनके जिम्मे धर्म-प्रचार, न्याय, रक्षा आदि अनेकों लोकहित के कार्य थे।

(2) धम्म महामात्रों की नियुक्ति :- धम्म महामात्रों और धम्म-पुतों की नियुक्ति की- जन-कल्याण सम्बन्धी अनेकों कार्य करना जैसे — धम्म प्रचार, एवं विभिन्न पंथों के बीच आपसी एकता स्थापित करना। साथ ही न्यायालयों द्वारा दिए गए दण्डों पर पुनर्विचार कर दण्ड कम करना, अथवा माफ करना। आदि करते थे।

(3) ~~रज्जुकों को लोकहित के कार्य करने की स्वतन्त्रता~~ अशोक ने

(3) प्रतिवेदकों की नियुक्ति :-

अशोक के विचार में राजा को हर समय हर जगह जनता की भलाई का कार्य करना चाहिए। इस कार्य के लिए प्रतिवेदक नियुक्त किए गए। उन्हें आदेश था कि किसी भी घड़ी, किसी भी स्थान पर जनता की आवाज पहुँचाई जाए। वह स्वयं कहता है —

Scanned with CamScanner

Next Day

"हर समय और हर स्थान पर - चाहे मैं भोजन कर रहा हूँ, चाहे अंतःपुर में होऊँ, मेरे राज्य के अधिकारी जनता की कोई भी बात मुझ तक पहुँचा सकते हैं। जनता की सेवा के लिए मैं हर समय तैयार हूँ।"

Scanned with CamScanner